प्रातः क्लास 30-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः जब बच्चे और बाप एक दो में मिलते हैं, एक दो में नज़र मिलाते हैं, मिलेंगे तो जरूर नज़र मिलेगी ना। यह जीवात्मायें परमात्मा के साथ नज़र मिलाती है। वह भी शरीर में बैठे हैं तब निहाल हो जाते हैं। उनके पहले तो बेहाल थे। बच्चे समझते भी है बाप जब आते हैं तो हम सारे विश्व के मालिक बनते हैं। ड्रामा के प्लेन अनुसार 5000 वर्ष पहले मिशल तुमको यह बाप मिला है और तुम अन्दर में समझते हो कि हम अभी विश्व के मालिक बनते हैं। इसको कहा जाता है निहाल। तुम हर 5000 वर्ष बाद निहाल होते हो बाप से नज़र मिला कर के। फिर आधा कल्प बाद जब रावण राज्य होता है तो बेहाल बनना शुरू होता है। यह खेल है। यह अच्छी बुद्धि में बैठ जाना चाहिए। कोई नई बात नहीं। एक अक्षर से समझने की बात है। वह खेल सुनाने में तो कितना समय लगता है। यह तो एक अक्षर की बात है। बाप मिला तो जरूर बेहद की बादशाही मिलेगी। निश्चय बुद्धि सारे विश्व पर विजय पहनते हैं। संशय बुद्धि तो विजय पा न सके। बाप जानते हैं भक्ति मार्ग में तुम ने बहुत टाईम वेस्ट किया है, पैसा खर्च कर वेस्ट गंवाया है। तुम विश्व के मालिक थे फिर ऐसे चक्र लगाया, यह भी बुद्धि में याद करना पड़ता है। हमने 84 का चक्र लगाया। हमारा यह हाल हुआ है। फिर अभी बेहद का बाप मिला है। जो नज़र से निहाल कर देते हैं और हमें विश्व का मालिक बनाते हैं। तो बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। इसमें मुंझने की बात ही नहीं। बाप मिला निश्चय हुआ तो जरूर वरसे का भी निश्चय हुआ। बाप में ही संशय हुआ तो वरसा मिलेगा ही कैसे। यह तो बिल्कुल सहज समझने की है। और कोई भी शास्त्र आदि में सहज राजयोग की बात है नहीं। ऐसा कोई भी वेद-शास्त्र, ग्रन्थ आदि नहीं है। एक ही गीता सर्व शास्त्रमई .... गाई हुई है। ऊंच ते ऊंच श्रीमदभगवदगीता कहा जाता है। बाकी सभी है रचना। बाप रचयिता तुमको जो सुनाते हैं उससे तुम प्रारब्ध पाते हो। फिर वहां तो कोई शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सभी शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। इन से फायदा कुछ भी नहीं। वह शास्त्र भी मनुष्य ही बनाते हैं। कोई भगवान नहीं बनाते। भगवान कब हाथ में शास्त्र आदि लेते हैं क्या। उनका गुरु टीचर कोई है क्या। यह तो सुप्रीम ज्ञान का सागर है। यह भी तुम अभी ही समझते हो। और कोई भी विद्वान आचार्य पंडित आदि कुछ नहीं जानते। यह भी वर्ध नाट अपेनी था। यह रथ जो है बहुत जन्मों के अन्त में वर्ध नाट अपेनी बन गया है। फिर इनको अगले पहले नम्बर में जाना है। इसलिए इसमें ही प्रवेश करना है। यह ड्रामा चेंज नहीं हो सकता। जैसे लौकिक बाप का वरसा पाने में निश्चय है ना। बच्चा पैदा हुआ वैसे वरसे का हकदार हुआ। यह भी ऐसे ही है। यहां कुमार-कुमारी दोनो ही वरसा पा सकते हैं। बाप आत्मा ने बाप को पहचाना और वरसे का हकदार हुआ। आत्मायें सभी भाई हो जाती है। बाप समझाते हैं बच्चे अपने को भाई2 समझो। नहीं तो बेहद के बाप से वरसा कैसे लेंगे। सभी का कल्याण अथवा सदगति अभी ही होती है। इसमें मुंझने अथवा कुछ भी पूछने की दरकार ही नहीं। हियर नो ईवील, सी नो ईवील ... भल कुछ भी पढ़े-लिखे हो परन्तु वह बाप के आगे बोलो नहीं। बाप तो एक एक अक्षर में ही निहाल कर देते हैं। हे बच्चों मामेकं याद करो। बच्चे जानते हैं बाप तो सृष्टि को बदलने वाला है। नई सृष्टि रचने वाला है। पुरानी दुनियां खत्म होनी है। समझते होते भी फिर भी बाप को भूल जाते हैं। इसलिए बाप को भी यहां ठहरना पड़ता है। नहीं तो है बिल्कुल सहज। बाप का परिचय भी मिला, 84 का चक्र समझाया। यह बहुत है। मुझे तो चले जाना चाहिए। परन्तु जानता हूं तुम्हारे साथ माया का युद्ध है। इसलिए घड़ी2 भूल जाते हो। मैं चला जाऊं फिर घड़ी2 आऊं? इसलिए जाता ही नहीं हूं। तुम्हारे बिगर जाऊंगा ही नहीं। बच्चों साथ तो लव है ना। बाप कहते हैं मीठे बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह मैं निश्चय करता हूं। क्योंकि इसको योगाग्नि कहा जाता है। वह हठयोग आदि बिल्कुल ही अलग है। वह है शरीर के तन्दुरुस्ती के लिए। बाप ऐसे नहीं कहते कि धंधा धोरी आदि छोड़ दो। नहीं। वह भी भल करो। सिर्फ मुझे याद करो और सभी की याद भुलाये दो। भल घर में रहो खाओ-पीओ

सभी कुछ करो। एक तो पवित्र रहो और देवी गुण धारण करो। खान-पान जैसे देवताओं का है वैसा रखो। देवताओं के आगे कब प्याज सेकरीन आद रखते हो? चाय भी नहीं रखते हो। यहां तो देखो ठंढी हो या गर्मी हो चाय जरूर पीते हैं। 50 कप चाय के पीने वाले, 50 सिगरेट पीने वाले भी होते हैं। एक आदत पड़ जाती है। बाप ने समझाया है रावण राज्य में ही तुम्हारा यह हाल हुआ है। पहले2 हम देवतायें सर्व गुण सम्पन्न .... थे। फिर नीचे गिरे हैं। यह तो समझना बहुत ही सहज है। कोई बहाना बताते हैं सिगरेट बिगर पेट ऐसा होता है। यह तकलीफ होती है। कुछ भी नहीं होता। किसको भी कोई बिमारी आद है तो वैद लोग भी दवाई देते हैं। बाप कहते हैं बच्चे यह अन्तिम जन्म है। हिसाब-किताब सभी यहां चुक्त कर फिर निरोगी बन जावेंगे। यह भारत जब स्वर्ग था तो कितना हेल्दी वेल्दी पवित्र था। ख्याल तो करो। आज से 5000 वर्ष पहले तुमको कितना अथाह धन था। तुम ही विश्व के मालिक थे। कितने शाहुकार थे। निश्चयभी हुआ, पुरुषार्थ भी करते हैं बराबर हम अभी तमोप्रधान बने हैं ड्रामा प्लैन अनुसार अभी फिर से हम सतोप्रधान कैसे बनें। बाप तो बहुत ही सहज उपाय बताते हैं। तुमको देवता भी जरूर बनना है। पुरुषार्थ भी जरूर करेंगे श्रीमत पर। अगर पुरु० न करेंगे तो कब पद हो जावेगा। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम आत्मा भी जरूर हो। पहले तुम आत्मायें हो मेरे बच्चे फिर यहां पार्ट बजाने आये हो ड्रामा के प्लैन अनुसार। 84 जन्म लेकर तुम पार्ट बजाते हो। अभी यह झाड़ जड़-जड़ी भूत हो गया है। यह सारी विश्व की पुरानी है। पहले2 नई विश्व अर्थात नई दुनिया थी। यह लक्ष्मी राज्य करते थे। बाप स्मृति दिलाते हैं। बच्चे तुम ही थे। तुम ने ही 84 जन्म लिये हैं। अभी फिर तुम से ही मिला हूं। कल्प2 मिलुंगा। अभी तुम बच्चों को अपना गंवाया हुआ राज्य मिला है। माया रावण ने तुम्हारा राज्य आधा के लिए छीन लिया है। अभी फिर उस पर जीत पहनो। उसमें खर्चा आद कुछ नहीं। रावण ने जब तुम्हारे से राज्य छीना तो भी कोई खर्चा वा लड़ाई आद थोड़े ही हुआ। कुछ भी नहीं। सिर्फ दैवी-गुणों वाले बदलो आसुरी गुण वाले बन पड़े हो। वह है आसुरी सम्प्रदाय। तुम हो दैवी सम्प्रदाय। शास्त्रों में फिर देवताओं और असुरों की लड़ाई दिखा दी है। वह बात तो है नहीं। तुम्हारा लड़ाई है ही माया साथ। बाप कहते हैं मैं इतना सहज बताता हूं फिर भी तुम भूल जाते हो। इस पढ़ाई से तुम मनुष्य से देवता डबल सिरताज बन जाते हो। याद से तुम्हारे पास लाईट आ जाती है और सृष्टि चक्र को जानने से तुम डबल सिरताज बन जाते हो। बाकी बाप कोई आर्शीवाद आद नहीं देते। पढ़ाई से पद पाना है। ऐसा नहीं धनवान भव आयुष्वान भव। नहीं। यह पढ़ाई है। इसमें कुछ भी खर्चा नहीं। बहुत गरीब आते हैं। वह क्या खर्चा करते हैं। बहुत गरीब शाहुकारों से भी ऊंच चले जाते हैं। उनके पास कुछ भी नहीं है तो इर्टन में सभी कुछ मिल जाता है। कैसे वह बाप बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे बात तो एक ही है अल्फ की। पीपछाड़ी बेते अर्थात बरसा का दुम्ब लटका हुआ ही है। यह तो कोई भी समझ जाते हैं। विश्व की बादशाही का दुम्ब लटका हुआ कितना सहज है। फिर भी तुम भूल जाते हो। तो क्या हालत हो जाती है। कोई न कोई विकारों की चक्कर में आ जाते हैं। सब से जास्ती तोखा है काम महाशत्रु। बाबा को लिखते हैं हमने हार खा ली। बाबा कहते हैं मैं आया हूं तुमको गोरा सुन्दर बनाने तुम फिर श्याम बन काला मुंह करते हो। काला मुंह करने से तुम्हारी सारी की हुई कमाई चट हो जाती है। फिर से पुरुषार्थ करना पड़े। मैं आया ही हूं पतित से पावन बनाने। बच्चु बादशाह पैरु वजीर की कहानी है ना। नम्बरवन हुर होते हैं। माया भी बड़ा हुर है। नम्बरवन बच्चु बादशाह है काम। क्रोध है पैर वजीर। क्रोध से खुद भी जलते हैं। दूसरे को भी जलाते हैं। काम विकार बड़ा कड़ा है। सूरदास की भी कहानी है। सर्प को डोरी समझ कर ऊपर गया। विकार में गिरा। फिर उनको समझ में आया हम कितना पापात्मा बन पड़ा। फिर उसने अपनी आंखें ही निकाल दी। बाप कहते हैं आंखें बड़ी धोखा देने वाली है। इसलिए तुम्हारी यह आंखें निकाल ज्ञान का तीसरा नेत्र दे त्रिनेत्री बनाता हूं। अपने को आत्मा समझो। हम सभी भाई2 हैं। तो फिर शरीर का भान रहेगा नहीं। यह है बहुत बड़ी मंजिल। इसमें पुरुषार्थ बहुत अच्छा चाहिए।

कोई पूरा पुरुषार्थ नहीं कर सकते तो भी स्कूल में तो आ सकते हैं ना। स्कूल में कोई2 को स्कालरशिप भी मिलती है। जो अच्छे पास होते हैं उनको ईनाम मिलेगा। यह ल0ना0 है। इनको स्कालरशिप मिली है ना। बाबा ने समझाया है माला है आठ की। चार जोड़ा, बाकी बीच में है हीरा। उनको गिना जाता नहीं। आठ युगल है जिसके लिए कहते हैं, आठ रत्न पहनो। कोई भी साधु सन्त इस माला का राज नहीं जानते हैं कि यह कौन हैं। प्रवृति मार्ग है ना। तो युगल बनते हैं। जो अच्छा पढ़ते हैं उनको स्कालरशिप मिलती है। बाकी है प्रजा। सभी को यही संदेश देना है कि बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। तुम पैगम्बर मैसेन्जर हो ना। सभी को यही पैगाम दो। और कोई न पैगम्बर है न मैसेन्जर है न गुरु ही है। यह लोग नानक को, क्राईस्ट आद को गुरु समझ लेते हैं। वास्तव में उनको बाप नहीं कहा जाता। बाप क्रियटर तो एक ही है। बाप ही पुरानी दुनिया को बदली करेंगे। बाप आते ही हैं नई दुनिया स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने। यह तो बिल्कुल ही क्लीयर है। आते ही तब है नईदुनिया बननी है। तो त्रिमूर्ति का चित्र बनाया है परन्तु उसमें बाप को दिखाया नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर क्रियशन को दिखाय है। क्रियटर है नहीं। ब्रह्मा विष्णु शंकर भी रचयता तो चाहिए ना। अभी तुम बच्चों ने समझा है बाप है रचयिता। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। इनको भगवान नहीं कहा जाता। ब्रह्मा का अव्युपेशन तो समझाया है। बाप कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म वानप्रस्त अवस्था में, तो क्या वह भगवान हुआ? देवता हुआ? कुछ भी नहीं। यह तो पतित है। तुम बुलाते भी हो पतित दुनिया में। तो पतित शरीर में ही आकरपिर तुमको पावन बनाता हूं। वे तो जरूर सर्वशक्तिवान कहेंगे ना। माया भी फिर कम नहीं। तमोप्रधान कैसे बनते हैं यह कोई भी समझते थोड़े ही हैं। जैसे शिव का चित्र है रावण का भी चित्र है। जलाते रावण को हैं। क्योंकि रावण दुःख देने वाला है। शिव तो सुख देने वाला है उनको थोड़े ही जलायेंगे। वह है सुखदाता, रावण है दुःखदाता। रावण राज्य में सभी विकारी वेश्यालय में है। बाप कहते हैं अभी शिवालय में चलो। मुझे याद करते रहो तो तुम मेरे पास पहुंच जायेंगे। माया याद में ही बहुत विघ्न डालती है। गुलबकावली का खेल भी इस पर है। तुम हर एक आत्मा का रूप भी है। बहुत सूक्ष्म है। परन्तु है जरूर। साक्षात्कार कर सकते हो परन्तु समझ में नहीं आवेगा। फायर फ्लाय से भी बहुत महीन है। उनको जाना जा सकता है। मैं जानता हूं। इन आंखों से देखा नहीं सकते। हे परमात्मा कहते हो, उनको देखा है क्या। जैसे उनको जाना है वैसे आत्मा को भी जाना जाता है। भल दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है परन्तु उससे कुछ भी समझ न सकेंगे। इतनी छोटी सी बिन्दी गजब सितारे मिशल है। वह स्टार्स तो बहुत ही बड़े होते हैं। दूर से छोटी दिखाई पड़ते हैं। चन्द्रमा ऊपर में बहुत बड़ा है तब तो उसमें पलाट लेने का करते हैं। परन्तु कुछ भी हो नहीं सकता। इसको कहा जाता है अति घमण्ड माया का। तो फिर विनाश हो जाता है। यह है झूठ घमण्ड। है कुछ भी नहीं ऊपर में। फालतू मेहनत करते रहते हैं। बाप ने समझाया है विनाश के लिए बन्दूकों, एरोपलेन या टैंक आद की भी दरकार नहीं। वह कहते हैं घर बैठे हम ऐसे बाम छोड़ेंगे जो झट खत्म हो जायेंगे। इसमें भी समय चाहिए ना। खर्चा कितना करते हैं। चाहते हैं विश्व में शान्ति हो। तो इसके लिए मनुष्य भी थोड़े चाहिए ना। नई दुनिया में होते ही थोड़े हैं। पुरानी दुनिया बदलनी ही है। याद की यात्रा में तुमको कितना टाईम लगता है। शुरू के तुम बच्चे हो। फिर तुम योग में अपने को पास समझते हो? नहीं। जब नजदीक समय आवेगा तो फिर खूब पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। स्कूल में जब इम्तहान के दिन होते हैं तो बच्चे पढ़ाई में बड़े ही जोर से लग जाते हैं। रात दिन मेहनत करते हैं। यह भी एक ही इम्तहान है। थोड़ा लोडा आद आयेगा तो फिर अच्छी रीत पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। वैराग्य आवेगा। समझेंगे यह रीहलसल होती है। बाप बैठ थोड़े ही जायेंगे। फिर तुम जोर से पुरुषार्थ करने लगेंगे। परन्तु फिर ऐसे समझ बैठ थोड़े ही जाना है। पुरुषार्थी तो अभी से ही बनना है। जो भी दिव्यदृष्टि से देखा है तो पुरानी दुनिया का विनाश नई दुनिया की स्थापना वह भी फिर आंखों से देखेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे यह दुनिया अभी बदलनी है। इसलिए ही यह बम्स आद बन रहे हैं।

इसलिए ही यह बम्स आद बन रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र फिरता है। एक्टिविटी में जरा भी फर्क नहीं। न एक बढ़ेगा न कम होगा। इसको कहा जाता है बना बनाया ड्रामा। कब बना, यह नहीं कह सकते। अनादी बना बनाया ड्रामा है जो चलता ही रहता है। इनका न आदि है न अन्त है। यह तो सदैव है ही है। तो मनुष्य फिरमुक्ति को कैसे पा सकते। मोक्ष किसका भी हो नहीं सकता। यह है आसुरी-राज्य। मूर्खों की राजधानी। अभी तुम बच्चे समझते हो हम सभी आत्मायें नंगे आये थे। यहां आकर हम शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमोप्रधान में आते हैं ना। फिर यह दुनिया तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। फिर वही चक्र रिपीट होना है। इसमें कोई गफलत की बात ही नहीं। बुढ़ियां बोलती है हमारा मुख नहीं खुलता है। अरे सिर्फ शिव बाबा को याद करो, वह हम आत्माओं का बाप है। मुख से कुछ भी बोलो नहीं। चुप रहो। बाप खुद कहते हैं चुप हो जाओ। एकदम गूंगा बना देते हैं। उनको गूंगे की मिठाई कहा जाता है। विश्व का राज तुमको मिलता है। कम बात है क्या। तुम्हारे अन्दर में सारा चक्र फिरता है। 84 जन्म कैसे लेते हैं। गूंगे की मिठाई क्या है यह भी कोई समझते थोड़े ही हैं। बाप कहते हैं विश्व की बादशाही है गूंगे की मिठाई। वहां तो आत्मायें मूं= गूंगे रहती हैं। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। फिर भी बच्चे गफलत करते रहते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी तुम याद कर सकते हो। उस घर को भी जैसे मंदिर बनाना है। जो भी आवे उनको पैगाम दो। ऐसे भी बहुत हैं खुद बान्धेली हैं दूसरों को ज्ञान दे आप समान बना देती है। ऐसे मत समझो बान्धेली सर्विस नहीं करता है। वह भी सर्विस करती है। सिर्फ पवित्र हैं। विश्व की बादशाही देने वाले बाप से मिलें। अबलाओं पर अत्याचार और कहां भी कोई सतसंग आद में नहीं होते। ढेर के ढेर सतसंगों में जाते हैं। कोई भी कहां जाने की मना नहीं करते हैं। गांधी के पास कितने जाते थे। समझते थे बापू जो रामराज्य स्थापन कर रहे हैं फिरंगी को रवाना किया। बस= बस यह रामराज्य हुआ। बाप कहते हैं राम राज्य तो क्या और ही जानती बस= रावण राज्य हुआ है। कितने भूख हड़ताल आद करते जेल में जाते रहते हैं। कहते हैं गऊ हत्या न करो। अभी गवर्मेन्ट को इन से कमाई कोई कम थोड़े ही है। कितने जूते आद बनते हैं। गवर्मेन्ट समझेगी इतनी कमाई आमदनी हमारी बन्द हो जावेगी। और फिर शहर2 में गऊशाला रखनी पड़े। खिलाना पड़े। उन्हों को तुम समझा सकते हो। तुम लिख भी सकते हो बाप कहते हैं पहले तो सभी को इस कोस से बचाना है। काम कटारी चला= चलाना यह कोस करना बन्द करो। काम कटारी चलाकर एक दो को कत्ल करते हैं। सतयुग में यह कोस होता नहीं। पहले तो यह बन्द करो। सन्यासी कहते हैं स्त्री सर्पनी है। तो पुरुष भी सर्प है ना। अपना नाम न ले स्त्री का नाम लेते हैं। कितनी इनसल्ट करते हैं। ऐसे2 को फिर गुरु करना कितनी मूर्खता है। माईयां जैसे कि पति की सेवा करती है। वैसे सन्यासियों के भी पांव धो उसको चरणामृत समझ कर वह पीती है। कितना अधर्म हो गया है। इसलिए भगवान कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उद्धार करता हूं। तुम फिर किसको अपना गुरु बनाते हो। क्या भगवान झूठ बोलते हैं। ऐसे2 तुम फिलैल्स जाकर समझाओ। बात करने की हिम्मत चाहिए। इसलिए शेरणी शक्ति कहा जाता है। निर्भय होना चाहिए। बाप निर्भय है ना। तुमको भी बनाते हैं। डरो मत। क्या करेंगे, सच्च तो तुमको बतानी ही है ना। इम्तहान बहुत ऊंचा है। ल0ना0 बनना है।

कम बात है क्या। सिर्फ याद में ही माया विघ्न डालता है। इस पर ही लड़ाई चलती है। कोई सेन्टर भी खोलते हैं तो कितने आत्माओं का कल्याण होता है। तो इसका भी एवजा बहुत मिल जाता है। पैसा तो कभी मिट्टी में मिल जावेगा। हिम्मते बच्चे मददे तो बाप है ही है। कितने ढेर बच्चे= बच्चे मददगार बैठे हैं। भल बान्धेलियां हैं, घर में चित्र रख दो सर्विस करते रहो। ऐसे है तो सफल करना चाहिए। नहीं तो सभी मिट्टी में मिल जावेगा। तुम न कर सको तो बाप बैठा है। हुन्डी बाप भरने वाला है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।

*:::***:::*